रस क्या है।

भारतीय संस्कृति एवं चिंतन का महत्वपूर्ण अंग है कला के क्षेत्र में रस का विशेष स्थान है भारतीय कलाओं जैसे काव्य नाट्य संगीत आदि का रस से गहरा संबंध है। कला के द्वारा प्राप्त अनुभूति का संबंध भाव तथा आनंद से है आनंद ही रस का मौलिक रूप है।

आचार्य भरत ने सर्वप्रथम रस सिद्धांत की सुव्यवस्थित चर्चा की थी परन्तु संस्कृत के ग्रंथों में प्राचीन काल से ही विभिन्न अर्थों में रस की चर्चा हुई है। निम्नलिखित चार अर्थ के लिए चर्चा हुई है जो इस प्रकार है -

(1) पदार्थ का रस
(2) वेद तथा उपनिषदों में वर्णित रस
(3) साहित्य तथा नाट्य आदि में रस
(4) भक्ति तथा मोक्ष का रस

पदार्थ के रस से अभिप्राय है किसी फल या वनस्पति आदि को निचोड़ कर निकाले गए रस से है। जैसे - संतरे का रस, ईख का रस इत्यादि वेद तथा उपनिषदों से अभिप्राय गौः पृश्नि मंजु सोम आदि में प्रस्तुत रस से है महाकाव्यों में ब्रह्मानंद की प्राप्ति के लिए भी रस का प्रयोग होता है।

Scanned with CamScanner

भरत के समय तक
रस का अर्थ विकसित हो चुका था
भरत ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में अपने
से पूर्व इन आचार्यों के नाम बताए जिन्होंने
रस के बारे में बताया। परन्तु यह
बहुत दुखद बात है कि इन आचार्यों
के ग्रंथ आज उपलब्ध नहीं है।
भरत ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र के
छठे एवं सातवें अध्याय में रस
एवं रस के बारे में विस्तृत
जानकारी दी है।

नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में भरत
ने रस के प्रकार एवं रस के वर्ण
एवं देवता के बारे में बताया है।

नाट्यशास्त्र के सातवें अध्याय में भरत
ने स्थाई, विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी
भाव के बारे में वर्णन किया है।

इस प्रकार हम देखते
है कि रस के बारे में विस्तृत जानकारी
प्राचीन काल से ही मिलती है।

Scanned with CamScanner